
आलस्य और अलबेलापन - 48

अव्यक्त बापदादा :-

➤ ➤ हर एक स्वयं के प्रति प्रयोग में लग जायेंगे तो प्रयोगशाली आत्माओं का संगठन कितना पॉवरफुल बन जायेगा! * वह संगठन की किरणें अर्थात् वायब्रेशन्स बहुत कार्य करके दिखायेंगी।

➤ ➤ इसमें सिर्फ दृढ़ता चाहिये - मुझे करना ही है। दूसरों के अलबेलेपन का प्रभाव नहीं पड़ना चाहिये। आपकी दृढ़ता का प्रभाव औरों पर पड़ना चाहिये। क्योंकि दृढ़ता की शक्ति श्रेष्ठ है या अलबेलेपन की शक्ति श्रेष्ठ है?

➤ ➤ बापदादा का वरदान है जहाँ दृढ़ता है वहाँ सफलता है ही। तो क्या बनेंगे? प्रयोगशाली, त्रिकालदर्शी आसनधारी। और तीसरा क्या करेंगे? जैसा समय, वैसी विधि से सिद्धि स्वरूप।

➤ ➤ तो वर्ष का ये होमवर्क है। ये होमवर्क स्वतः ही बाप के समीप लायेगा। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा - कोई भी कर्म करने के पहले आदि-मध्य-अन्त को सोच-समझ कर्म किया और कराया। अलबेलापन नहीं कि जैसा हुआ ठीक है, चलो, चलाना ही है। नहीं। तो फॉलो ब्रह्मा बापा फॉलो करना तो सहज है ना! कॉपी करना है ना, कॉपी करने का तो अक्ल है ना! (01.02.1994)

➤➤ होमवर्क

- ➤ स्वयं के प्रति प्रयोगशाली
- ➤ त्रिकालदर्शी आसनधारी
- ➤ जैसा समय, वैसी विधि से सिद्धि स्वरूप।
- ➤ होमवर्क बाप के समीप लायेगा

→ इसके लिए बचना है :

- संगदोष से
- अन्न दोष से
- वाणी के दोष से
- कर्म के दोष से
- माया का आकर्षण से
- व्यर्थ संकल्पों से

➤➤ प्रयोगशाली आत्मा बनना

➤ ➤ अपने जीवन को प्रयोगशाला बनाना है इसके लिए प्रयोग करना है

- अपने पर
- अपने संस्कारों पर
- समस्याओं पर
- एक एक कर्मेन्द्रिय पर
- आदतों पर
- सम्बंधों पर
- सेवाओं पर
- एक एक गुण पर
- एक एक शक्ति पर
- एक एक श्रीमत पर प्रयोग

- ये श्रीमत फालो किया तो उससे क्या हो रहा है

- फायदा है या नुकसान

- एक एक संकल्प पर
- एक एक बोल पर
- एक एक वृत्ति पर

» _ » हमारा जीवन प्रयोगशाला बन जाए।

»» भोजन पर प्रयोग

» _ » जितने प्रकार के भोजन करते हैं तो उतने गुण धारण करने पड़ेंगे

→ ये ये खाया

- इससे क्या हुआ

- शरीर में वासनायें इच्छाये कम हुई या बढ़ी

» _ » ब्राह्मणों के लिए सबसे महत्वपूर्ण है भोजन

» _ » अगर भोजन को ठीक कर लिया जाए तो सबकी स्थिति क्या से क्या हो जाए

→ अति तीखा नमक तेल ये सब चित को शांत नहीं कर सकते

» _ » आत्मा को जब आत्मिक स्थिति में है तो उसे कितने भोजन की आवश्यकता है जितना हम खा रहे हैं

→ एक ही दिन कर लो

→ रिजल्ट तुरंत ही आयेगा

→ आत्मिक स्थिति बढ़ जायेगी

» _ » खाने के लिए जी रहे हैं या जीने के लिए खा रहे हैं।

→ ये स्वयं स्वयं से पूछो

- अगर जीने के लिए खा रहे हैं तो बहुत कुछ आउट हो जायेगा।

→ Experiment किया जाए तो

- रिजल्ट कुछ और ही निकलेगे

»_» योगी अर्थात संयम जितना स्वयं का स्वयं को पता है उतना किसी को नहीं पता।

→ स्वयं स्वयं के डाक्टर बनो।

→ स्वयं स्वयं को ठीक करो।

- खान पान को ठीक कर लिया जाए तो 90% प्योरिटी अच्छी हो जायेगी।

➤➤ संकल्पों पर प्रयोग

»_» संकल्पों पर प्रयोग करना है कि क्या संकल्प उत्पन्न हो रहे हैं ??

→ जो उत्पन्न हो रहे हैं

- हम विचारों से एकरूप न हो जाए

- साक्षी हो जाए

»_» अपने विचारों को चेक करो

→ हम अलग नहीं हो सकते

→ कैसे चेक करें कि हम विचारों से एक हैं

- जैसे क्रोध उत्पन्न हुआ तो

- हम स्वयं क्रोधी हैं

- काम उत्पन्न हुआ तो

- कामस्वरूप ही हम हैं

- लोभ उत्पन्न हुआ तो

- हम लोभ में ही हैं

»_» बीच में एक स्क्रीन डालनी है जैसे मूवी से पर्दे पर सब दिखता है वैसे हम अपने आप को देख सकें

→ अपने आप को अलग रख सकें कि ये मैं हूँ

➤➤ अपने अपने ही विचारों को साक्षी होकर देखना

»_» ये विचार आया उसका क्या प्रभाव हुआ ??

→ क्रोध उत्पन्न हुआ इससे शरीर में क्या हुआ

- धड़कन बढ़ गई

- आवेश आ गया जोश आ गया

- उसके तुरंत बाद शांत नहीं बैठ सकते

- Concentration नहीं हो सकती

- तुरंत योग में नहीं बैठ सकते

»_» क्योंकि क्रोध का असर चित्त पर रह जाता है।

»_» संकल्प मात्र से शरीर मे हलचल उत्पन्न हो जाती है।

»_» याद न रहने का कारण एकाग्रता कम है।

→ एकाग्रता की कमी होती है

- जब कोई न कोई आवेश होता है
- वो चित को हिला देता है
- कुछ भी प्रतिबिम्बित नहीं होता

»_» जितना हम जिस अवस्था मे शरीर का त्याग करेगे उतना ही उस अवस्था मे अगले जन्म जन्मते ही चेतना फिर से जागृत होगी।

→ जन्मते ही पता चल जायेगा मैं क्यूं आया हूं

→ संसार मे मेरा जन्म लेने का लक्ष्य क्या है

→ संसार मे जाने का तो कार्य नहीं है

»_» जिस अवस्था मे शरीर त्याग किया जाए सम्पूर्ण होश की अवस्था मे तो ही दर्द हो पीडा हो ये सब भी प्रयोग किए जाते है कि इस अवस्था मे भी हम कैसे सम्पूर्ण होश मे रहे आत्म अभिमानी अवस्था में रहें।

